ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

भाई बोता सिंह तथा गरजा सिंह

सिक्ख इतिहास, भाग-दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंह

क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Websie:www.sikhworld.info

or

Websie:www.sikhhistory.in

नोट : यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

भाई बोता सिंह तथा गरजा सिंह

नादिर शाह के भागने के पश्चात् जब जक्रिया खान ने सिक्ख सम्प्रदाय के सर्वनाश का अभियान चलाया तो उसने सभी अत्याचारों की सीमाएं पार कर दी । जब पँजाब में कोई भी सिक्ख ढूँढने से भी न दिखाई दिया तो उसने इसी प्रसन्नता में दोंडी पिटवाई की कि हमने सिक्ख सम्प्रदाय का विनाश कर दिया है । अब किसी को भी विद्रोही दिखाई नहीं देंगे ।

(अठाहरवीं शताब्दी के शहीद)

भाई बोता सिंघ तथा गरजा सिंघ जी, श्री दरबार साहिब के दर्शनों को जा रहे थे जब वे जरनैली सड़क पर आये तो दो मुग़ल सिपाही इन को देखकर भाग खड़े हुए । वे आपस में कहने लगे जकरियां खान ने तो घोषण की है कि मैंने सिक्खो को समाप्त कर दिया है तो ये कौन है? यह बात सुनकर सिक्खों ने निकट की चुंगी, नूरद्दीन की सराह पर नियन्त्रण कर लिया और वहाँ पर घोषण कर दी कि यहाँ खालसा राज्य स्थापित हो गया है अत: लोग चुंगी की राशी उन्हें देगें । लम्बे समय तक जब कोई भी सरकारी प्रतिक्रिया न हुई तो उन्होंने राज्यपाल ज़करियां खान को एक पत्र लिखा। फल स्वरूप लगभग 200 सैनिक उनसे भिड़ने आये परन्तु युद्ध में बहुत बड़ी संख्या में सैनिक मारे गये।

ਭਾਈ ਬੋਤਾ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਗਰਜਾ ਸਿੰਘ ਜੀ– ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨਾ ਨੂੰ ਜਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਜਰਨੈਲੀ ਸੜਕ ਤੇ ਆਏ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੋ ਮੁਗ਼ਲ ਸਿਪਾਹੀਆਂ ਨੇ ਵੇਖ ਲਿਆ ਅਤੇ ਉਹ ਉਥੋਂ ਡਰ ਕੇ ਭੱਜ ਗਏ। ਭਜਦਿਆਂ ਉਹ ਕਹਿ ਰਹੇ ਸਨ ਕਿ ਜ਼ਕਰੀਆਂ ਖਾਨ ਨੇ ਤਾਂ ਇਲਾਨ ਕੀਤਾ ਸੀ ਕਿ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਫਿਰ ਇਹ ਕੌਣ ਹਨ? ਇਹ ਗੱਲ ਸੁਣ ਕੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਜ਼ਦੀਕ ਦੀ ਚੁੰਗੀ ਨੂਰਦੀਨ ਦੀ ਸਰਾਹ ਕੇ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰ ਲਿਆ ਅਤੇ ਉਥੇ ਇਲਾਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਕਿ ਇਥੇ ਖਾਲਸੇ ਦਾ ਰਾਜ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਇਸਲਈ ਸਭ ਲੋਕ ਚੁੰਗੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੇਵਣ। ਉਹ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਡਰਾ ਕੇ ਲੰਬਾ ਸਮਾਂ ਚੁੰਗੀ ਉਗਰਾਉਂਦੇ ਰਹੇ ਪਰ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਕੋਈ ਪ੍ਰਤੀਕ੍ਰਿਆ ਨਾ ਹੋਈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਸੂਬੇਦਾਰ ਨੂੰ ਇਕ ਚਨੌਤੀ ਭਰੀ ਚਿੱਠੀ ਲਿਖੀ। ਫਲ ਸਵਰੂਪ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਫੜਨ ਲਈ 200 ਸਿਪਾਹੀ ਦੀ ਇਕ ਪਲਟਨ ਭੇਜੀ ਗਈ। ਲੜਾਈ ਹੋਣ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਸਿਪਾਹੀ ਆਪਣੇ ਸੋਟਿਆ ਨਾਲ ਮਾਰ ਦਿੱਤੇ ਅਤੇ ਉਹ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋ ਗਏ।

इन्हीं दिनों लाहौर नगर के निकट गांव भड़ाण का निवासी श्री बोता सिंह अपने मित्र गरज सिंह के साथ श्री दरबार साहब के सरोवर में स्नान करने के विचार से घर से चल पड़े परन्तु

सिक्ख विरोधी अभियान के भय से वे दोनों रात को यात्रा करते और दिन में किसी झाड़ी अथवा विराने में विश्राम करके समय व्यतीत करते । पहले उन्होंने तरनतारन साहब के सरोवर में स्नान किया । फिर जब दिन ढ़लने के समय अमृतसर चलने के विचार से वे सड़क के किनारे की झाड़ियों की ओट से बाहर निकले तो उन्हें दो वर्दीधारी व्यक्तियों ने देख लिया । सिंह ने उन्हें देखकर कुछ भय सा महसूस किया कि तभी वे पठान सिपाही बोले, यह तो सिक्ख दिखाई देते हैं ?फिर वे विचारने लगे कि ये सिक्ख हो नहीं सकते । यदि सिक्ख होते तो ये भयभीत हो ही नहीं सकते थे । वे सिंह सोचने लगे, क्या मालूम सिक्खी ही हो, यदि सिक्ख ही हुए तो हमारी जान खतरे में है, जल्दी यहाँ से खिसक चलें । परन्तु वे एक दूसरे से कहने लगे कि जक्रिया खान ने तो घोषणा करवा दी है कि मैंने कोई सिक्ख रहने ही नहीं दिया तो ये सिक्ख कहाँ से आ गये ?

दोनों पठान सिपाही तो वहाँ से खिसक गये परन्तु उनकी बातों के सच्चे व्यंग्य ने इन शूरवीरों के हृदय में पीड़ा उत्पन्न कर दी कि जक्रिया खान ने सिक्ख समाप्त कर दिये हैं और सिक्ख कभी भयभीत नहीं होते ?

इन दोनों योद्धाओं ने विचार किया कि यदि हम अपने को सिक्ख कहलाते हैं तो फिर भयभीत क्यों हो रहे हैं ?यही समय है, हमें दिखाना चाहिए कि सिक्ख कभी भी समाप्त नहीं किये जा सकते । अत: हमें कुछ विशेष करके प्रचार करना है कि सिंह कभी भयभीत नहीं होते। बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने जरनैली सड़क पर एक उचित स्थान ढूँढ लिया, यह थी नूरदीन की सरां जिसे उन्होंने अपना बसेरा बना लिया और वहीं पास में एक पुलिया पर उन्होंने एक चुंगी बना ली, जिस पर वे दोनों मोटे सोटे (लट्ठ) लेकर पहरा देने लगे और सभी यात्रियों से चुंगीकर (टैक्स) वसूल करने लगे । उन्होंने घोषणा की कि यहाँ खालसे का राज्य स्थापित हो गया है, अत: बैलगाड़ी को एक आना तथा लादे हुए गधे का एकपैसा कर देना अनिवार्य है । सभी लोग सिक्खों के भय के कारण चुपके से कर देकर चले जाते, कोई भी व्यक्ति विवाद न करता परन्तु आपस में विचार करते कि जक्रिया खान झूठी घोषणाएं करवाता रहता है कि मैंने सभी सिक्ख विद्रोहियों को मार दिया है ।

इस प्रकार यह दोनों सिक्ख लम्बे समय तक चुंगी रूप में कर वसूलते रहे, परन्तु प्रशासन की तरफ से कोई कार्यवाही नहीं हुई । इन सिक्खों का मूल उद्देश्य तो सत्ताधारियों को चुनौती देना

थाकि तुम्हारी घोषणाएं हमने झूठी साबित कर दी हैं, सिक्ख जीवित हैं और पूरे स्वाभिमान के साथ रहते हैं ।

एक दिन बोता सिंह के मन में बात आई कि हम तो गुरू चरणों में जा रहे थे पवित्र सरोवर में स्नान करने, हम यहाँ कहाँ माया के जजंजाल में फँस गये हैं । हमने तो यह नाटक रचा था, प्रशासन की आँखें खोलने के लिए कि सिक्ख विचित्र प्रकार के योद्धा होते हैं, जो मृत्युको एक खेल समझते हैं,जिन्हें समाप्त करना सम्भव हीनहीं, अत: उसने प्रशासनको झँझोड़ने के लिएएक पत्र राज्यपाल जक्रिया खान को लिखा । पत्र में जक्रिया खान पर व्यंग्य करते हुए, बोता सिंह ने उसको एक महिला बताते हुए भाभी शब्द से सम्बोधन किया –

चिट्ठी लिखतम सिंह बोता
हाथ में सोटा, विच राह खलोता
महसूल आना लगये गड्डे नूं, पैसा लगाया खोता ।
जा कह देना भाभी खानों नूं, ऐसा कहता है सिंह बोता ।

बोता सिंह जी ने यह पत्र लाहौर जा रहे एक राहगीर के हाथ जक्रिया खान को भेज दिया । जब पत्र अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचा तो राज्यपाल जक्रिया खान क्रोध के मारे लाल पीला हुआ किन्तु उसे अपनी बेबसी पर रोनाआ रहा था कि उसके लाख प्रयत्नों और सख्ती के बाद भी सिक्खों के हौसले वैसे के वैसे बुलन्द थे । अत: उसने राहगीर से पूछा कि वहाँ कितने सिक्ख तुमने देखे हैं । इस परराही ने बताया, हजूर ! वहाँ तो मैंने केवल दो सिक्खों को ही देखा है, जिनके पास शस्त्रों के नाम पर केवल सोटे हैं परन्तु जक्रिया खान को उसकी बात पर विश्वास ही न हुआ, वह सोचने लगा कि केवल दो सिंह वह भी बिना हथियारों के इतनी बड़ी हकूमत को कैसे ललकार सकते हैं ?उसने जरनैल जलालुद्दीन को आदेश दिया, वह दौ सौ शस्त्रधारी घुड़सवार फौजी लेकर तुरन्त नूरदीन की सरां जायें, उन सिक्खों को हो सकते तो जीवित पकड़ कर लायें ।

बेचा जक्रिया खान और कर भी क्या सकता था । उसे पता थाकि ये सिक्ख लोग हैं, जो सवा लाखसे अकेले लड़ने का अपने गुरू आश्रय का दावा करते हैं । अत: दस बीस सिपाहियों के काबू आने वाले नहीं हैं ।

जब जलालुद्दीन के नेतृत्त्व में 200 सैनिकों का यह दल नूरदीन की सरां पहुँचा तो वहाँ दोनों सिंह लड़ मरने को तैयार खड़े मिले और उन्हें घोड़ो द्वारा उड़ाई गई धूल से ज्ञात हो गया था कि उनके द्वाराभेजा गया संदेशा काम कर गया है । जैसे ही मुगल सैनिकों ने सिंहों को घेरे में लेने का प्रयास किया, तभी सिंहों ने बहुत ऊँचे स्वर में जयघोष (जयकार) लगाकर शत्रु को ललकारना प्रारम्भ कर दिया और कहा - यदि तुम वीर योद्धा हो तो हमारे साथ एक एक करके युद्ध करके देख लो । इस पर जलालुद्दीन ने सिक्खों द्वारा दी गई चुनौती स्वीकार कर ली । उसने अपने बहादुर विपाही आगे भेजे । सिंहों ने उन्हें अपने मोटे मोटे सोटों से पलक झपकते ही चित कर दिया । फिर दो दो कर के बारी बारी सिपाही सिंहों के साथ जूझने आने लगे परन्तु उन्हें पलभर में सिंह मौत के घाट उतार देते, वास्तव में दोनों सिंह अपने सोटों से लड़ने का दिन रात अभ्यास करते रहते थे, जो उस समय काम आया। अब सिंहों ने अपना दाँव बदला और गर्ज कर कहा - अब एक एक के मुकाबले दो दो आ जायें जलालुद्दीन ने ऐसा ही किया, परन्तु सिंहों ने अपने पैंतरे बदल बदल कर उन्हें धराशाही कर दिया । जलालुद्दीन ने जब देखा की कि ये सिक्ख तो काबू में नहीं आ रहे और मेरे लगभग 20 जवान मारे जा चुके हैं तो वह बौखला गय और उसने एक साथ सभी को सिंहों पर धावा बोलने का आदेश दिया । फिर क्या था, सिंह भी अपनी निश्चित नीति के अनुसार एक दूसरे की पीठ पीछे हो लिए और घमासान युद्ध लड़ने लगे। इस प्रकार वह कई शाही सिपाहियों को सदा की नींद सुलाकर स्वयं भी शहीदी प्राप्त कर गुरू चरणों में जा विराजे ।

इस कांड से पँजाब निवासियों तथा जक्रिया खान को यह विदित करके सिंहों ने दिखा दिया कि सिक्खों को समाप्त करने का विचार ही मूर्खतापूर्ण है ।

जब जरनैल जलालुद्दीन लाहौर जक्रिया खान के सामने पहुँचा तो उसने पूछा - 'उन दोनों सिक्खों को पकड़ लाये हो ?उत्तर में जलालुद्दीन ने कहा - 'हजूर ! उनके शव लेकर आया हूँ' । इस पर जक्रिया खानने पूछा, अपना कोई सिपाही तो नहीं मरा, उत्तर में जलालुद्दीन ने कहा - हजूर ! क्षमाकरें, बस 25 सिपाही मारे गये हैं और लगभग इतने ही घायल हैं ।

समाप्त